(अव्यक्त इशारे)

अपनी शक्तिशाली मन्सा द्वारा सकाश देने की सेवा करो

1) आप शान्ति दूत बच्चे, कहाँ भी रहते, चलते-फिरते सदा अपने को शान्ति दूत समझकर चलो। जो स्वयं शान्त स्वरूप, शक्तिशाली स्वरूप में स्थित होंगे वह दूसरों को भी शान्ति और शक्ति की सकाश देते रहेंगे।
2) जैसे ऊंची टॉवर से सकाश देते हैं, लाइट माइट फैलाते हैं। ऐसे आप बच्चे भी अपनी ऊंची स्थिति अथवा ऊंचे स्थान पर बैठ कम से कम 4 घण्टे विश्व को लाइट और माइट दो। जैसे सूर्य भी विश्व में रोशनी तब दे सकता है जब ऊंचा है। तो साकार सृष्टि को सकाश देने के लिए ऊंचे स्थान निवासी बनो।
3) अपने डबल लाइट फरिश्ता स्वरूप में स्थित हो, साक्षी बन सब पार्ट देखते सकाश अर्थात् सहयोग दो क्योंकि आप सर्व के कल्याण के निमित्त हो। यह सकाश देना ही निभाना है, लेकिन ऊंची स्टेज पर स्थित होकर सकाश दो। वाणी की सेवा के साथ-साथ मन्सा शुभ भावनाओं की वृत्ति द्वारा सकाश देने की सेवा करो।
4) यह सकाश देने की सेवा निरन्तर कर सकते हो, इसमें तबियत वा समय की बात नहीं है। दिन रात इस बेहद की सेवा में लग सकते हो। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, रात को भी आंख खुली और बेहद की सकाश देने की सेवा होती रही, ऐसे फालो फादर करो। जब आप बच्चे बेहद को सकाश देंगे तो नजदीक वाले ऑटोमेटिक सकाश लेते रहेंगे। इस बेहद की सकाश देने से वायुमण्डल ऑटोमेटिक बनेगा।
5) आप ब्राह्मण बच्चे तना हो। तने से ही सारे वृक्ष को सका पहुंचती है। तो अब विश्व को सकाश देने वाले बनो। अगर 20 सेन्टर, 30 सेन्टर या दो अढ़ाई सौ सेन्टर या ज़ोन, यह बुद्धि में रहेगा तो बेहद में सकाश नहीं दे सकेंगे इसलिए हदों से निकल अब बेहद की सेवा का पार्ट आरम्भ करो। बेहद में जाने से हद की बातें आपेही छूट जायेंगी। बेहद की सकाश से परिवर्तन होना यह फास्ट सेवा का रिजल्ट है।
6) अब अपने दिल की शुभ भावनायें अन्य आत्माओं क पहुंचाओ। साइलेन्स की शक्ति को प्रत्यक्ष करो। हर एक ब्राह्मण बच्चे में यह साइलेन्स की शक्ति है। सिर्फ इस शक्ति को मन से, तन से इमर्ज करो। एक सेकण्ड में मन के संकल्पों को एकाग्र कर लो तो वायुमण्डल में साइलेन्स की शक्ति के प्रकम्पन स्वतः फैलते रहेंगे।
7) अभी आप बच्चे अपने श्रेष्ठ शक्तिशाली संकल्प द्वारा सका दो। कमजोरों को बल दो। अपने पुरुषार्थ का समय दूसरों को सहयोग देने में लगाओ। दूसरों को सहयोग देना अर्थात् अपना जमा करना। अभी ऐसी लहर फैलाओ – सैलवेशन लेना नहीं है, सैलवेशन देना है। देने में लेना समाया हुआ है।
8) जितना-जितना समय समीप आता जा रहा है उतना व्यर्थ संकल्प भी बढ़ रहे हैं! लेकिन यह चुक्तू होने के लिए बाहर निकल रहे हैं। उन्हों का काम है आना और आपका काम

है उड़ती कला द्वारा, सकाश द्वारा परिवर्तन करना। घबराओ नहीं। उसके सेक में नहीं आओ।

9) अब स्व कल्याण का ऐसा श्रेष्ठ प्लैन बनाओ जो विश्व सेवा में सकाश आपेही मिलती रहे। अभी उमंग-उत्साह से अपने मन में यह पक्का वायदा करो कि हम बाप समान बनकर ही दिखायेंगे। ब्रह्मा बाप का भी बच्चों से अति स्नेह है इसलिए एक-एक बच्चे को इमर्ज कर विशेष समान बनने की सकाश देते रहते हैं।

10) इतनी सारी प्रकृति को परिवर्तन करना, तमोगुणी संस्कारों वाली आत्माओं के तमोगुणी वायब्रेशन्स को बदलना और स्वयं को भी ऐसे खूने नाहेक वायुमण्डल के वायब्रेशन्स से सेफ रखना तथा उन आत्माओं को सहयोग देना, इस विशाल कार्य के लिए मन्सा को शुभ भावनाओं से सम्पन्न शक्तिशाली बनाओ।

11) अभी सेवा में सकाश दे, बुद्धियों को परिवर्तन करने की सेवा एड करो। फिर देखो सफलता आपके सामने स्वयं झुकेगी। सेवा में जो विघ्न आते हैं, उस विघ्नों के पर्दे के अन्दर कल्याण का दृश्य छिपा हुआ है। सिर्फ मन्सा-वाचा की शक्ति से विघ्न का पर्दा हटा दो तो अन्दर कल्याण का दृश्य दिखाई देगा।

12) जैसे बापदादा को रहम आता है, ऐसे आप बच्चे भी मास्टर रहमदिल बन मन्सा अपनी वृत्ति से वायुमण्डल द्वारा आत्माओं को बाप द्वारा मिली हुई शक्तियां दो। जब थोड़े समय में सारे विश्व की सेवा सम्पन्न करनी है, तत्वों सहित सबको पावन बनाना है तो तीव्र गति से सेवा करो।

13) कोई भी यह नहीं कह सकता कि हमको तो सेवा का चान्स नहीं है। कोई बोल नहीं सकते तो मन्सा वायुमण्डल से सुख की वृत्ति, सुखमय स्थिति से सेवा करो। तबियत ठीक नहीं है तो घर बैठे भी सहयोगी बनो, सिर्फ मन्सा में शुद्ध संकल्पों का स्टॉक जमा करो, शुभ भावनाओं से सम्पन्न बनो।

14) अपनी शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वृत्ति, श्रेष्ठ वायब्रेशन द्वारा किसी भी स्थान पर रहते हुए मन्सा द्वारा अनेक आत्माओं की सेवा कर सकते हो। इसकी विधि है - लाइट हाउस, माइट हाउस बनना। इसमें स्थूल साधन, चान्स वा समय की प्राब्लम नहीं है। सिर्फ लाइट-माइट से सम्पन्न बनने की आवश्यकता है।

15) मन्सा सेवा के लिए मन, बुद्धि व्यर्थ सोचने से मुक्त होना चाहिए। 'मनमनाभव' के मन्त्र का सहज स्वरूप होना चाहिए। जिन श्रेष्ठ आत्माओं की श्रेष्ठ मन्सा अर्थात् संकल्प शक्तिशाली है, शुभ-भावना, शुभ-कामना वाले हैं वह मन्सा द्वारा शक्तियों का दान दे सकते हैं।

16) मन्सा शक्ति का दर्पण है - बोल और कर्म। चाहे अज्ञानी आत्मायें, चाहे ज्ञानी आत्मायें - दोनों के सम्बन्ध-सम्पर्क में बोल और कर्म शुभभावना, शुभकामना वाले हों। जिसकी मन्सा शक्तिशाली वा शुभ होगी उसकी वाचा और कर्मणा स्वत: ही शक्तिशाली शुद्ध

होगी, शुभभावना वाली होगी। मन्सा शक्तिशाली अर्थात् याद की शक्ति श्रेष्ठ होगी, शक्तिशाली होगी, सहजयोगी होंगे।

17) जैसे अपने स्थूल कार्य के प्रोग्राम को दिनचर्या प्रमाण सेट करते हो, ऐसे अपनी मन्सा समर्थ स्थिति का प्रोग्राम सेट करो। जितना अपने मन को समर्थ संकल्पों में बिजी रखेंगे तो मन को अपसेट होने का समय ही नहीं मिलेगा। मन सदा सेट अर्थात् एकाग्र है तो स्वत: अच्छे वायब्रेशन फैलते हैं। सेवा होती है।

18) हर समय, हर आत्मा के प्रति मन्सा स्वतः शुभभावना और शुभकामना के शुद्ध वायब्रेशन वाली स्वयं को और दूसरों को अनुभव हो। मन से हर समय सर्व आत्माओं प्रति दुआयें निकलती रहें। मन्सा सदा इसी सेवा में बिजी रहे। जैसे वाचा की सेवा में बिजी रहने के अनुभवी हो गये हो। अगर सेवा नहीं मिलती तो अपने को खाली अनुभव करते हो। ऐसे हर समय वाणी के साथ- साथ मन्सा सेवा स्वत: होती रहे।

19) जैसे वाचा सेवा नेचुरल हो गई है, ऐसे मन्सा सेवा भी साथ- साथ और नेचुरल हो। वाणी के साथ मन्सा सेवा भी करते रहो तो आपको बोलना कम पड़ेगा। बोलने में जो एनर्जी लगाते हो वह मन्सा सेवा के सहयोग कारण वाणी की एनर्जी जमा होगी और मन्सा की शक्तिशाली सेवा सफलता ज्यादा अनुभव करायेगी।

20) जितना अभी तन, मन, धन और समय लगाते हो, उससे मन्सा शक्तियों द्वारा सेवा करने से बहुत थोड़े समय में सफलता ज्यादा मिलेगी। अभी जो अपने प्रति कभी-कभी मेहनत करनी पड़ती है - अपनी नेचर को परिवर्तन करने की वा संगठन में चलने की वा सेवा में सफलता कभी कम देख दिलशिकस्त होने की, यह सब समाप्त हो जायेगी।

21) जब मन्सा में सदा शुभ भावना वा शुभ दुआयें देने का नेचुरल अभ्यास हो जायेगा तो मन्सा आपकी बिजी हो जायेगी। मन में जो हलचल होती है, उससे स्वत: ही किनारे हो जायेंगे। अपने पुरुषार्थ में जो कभी दिलशिकस्त होते हो वह नहीं होंगे। जादूमन्त्र हो जायेगा।

22) अभी मन्सा की क्वालिटी को बढ़ाओ तो क्वालिटी वाली आत्मायें समीप आयेंगी। इसमें डबल सेवा है - स्व की भी और दूसरों की भी। स्व के लिए अलग मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। प्रालब्ध प्राप्त है, ऐसी स्थिति अनुभव होगी। इस समय की श्रेष्ठ प्रालब्ध है "सदा स्वयं सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न रहना और सम्पन्न बनाना"।

23) समय प्रमाण अब मन्सा और वाचा की इकट्ठी सेवा करो। लेकिन वाचा सेवा सहज है, मन्सा में अटेन्शन देने की बात है इसलिए सर्व आत्माओं के प्रति मन्सा में शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प हों। बोल में मधुरता, सन्तुष्टता, सरलता की नवीनता हो तो सहज सफलता मिलती रहेगी।

24) जितना स्वयं को मन्सा सेवा में बिज़ी रखेंगे उतना सहज मायाजीत बन जायेंगे। सिर्फ स्वयं के प्रति भावुक नहीं बनो लेकिन औरों को भी शुभ भावना और शुभ कामना द्वारा

परिवर्तित करने की सेवा करो। भावना और ज्ञान, स्नेह और योग दोनों का बैलेन्स हो। कल्याणकारी तो बने हो अब बेहद विश्व कल्याणकारी बनो।

25) मन्सा-सेवा बेहद की सेवा है। जितना आप मन्सा से, वाणी से स्वयं सैम्पल बनेंगे, तो सैम्पल को देखकर के स्वत: ही आकर्षित होंगे। कोई भी स्थूल कार्य करते हुए मन्सा द्वारा वायब्रेशन्स फैलाने की सेवा करो। जैसे कोई बिजनेसमेन है तो स्वप्न में भी अपना बिजनेस देखता है, ऐसे आपका काम है - विश्व-कल्याण करना। यही आपका आक्यूपेशन है, इस आक्यूपेशन को स्मृति में रख सदा सेवा में बिजी रहो।

26) वर्तमान समय विश्व कल्याण करने का सहज साधन अपने श्रेष्ठ संकल्पों की एकाग्रता द्वारा, सर्व आत्माओं की भटकती हुई बुद्धि को एकाग्र करना है। सारे विश्व की सर्व आत्मायें विशेष यही चाहना रखती हैं कि भटकी हुई बुद्धि एकाग्र हो जाए वा मन चंचलता से एकाग्र हो जाए। यह विश्व की मांग वा चाहना तब पूरी कर सकेंगे जब एकाग्र होकर मन्सा शक्तियों का दान देंगे।

27) मन्सा द्वारा सकाश तब दे सकेंगे जब निरन्तर एकरस स्थिति में स्थित होने का अभ्यास होगा। इसके लिए पहले व्यर्थ संकल्पों को शुद्ध संकल्पों में परिवर्तन करो। फिर माया द्वारा आने वाले अनेक प्रकार के विघ्नों को ईश्वरीय लगन के आधार से समाप्त करो। एक बाप दूसरा न कोई इस पाठ द्वारा एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाओ।

28) मन-बुद्धि को एकाग्र करने के लिए मनमनाभव के मंत्र को सदा स्मृति में रखो। मनमनाभव के मंत्र की प्रैक्टिकल धारणा से पहला नम्बर आ सकते हो। मन की एकाग्रता अर्थात् एक की याद में रहना, एकाग्र होना यही एकान्त है। जब सर्व आकर्षणों के वायब्रेशन से अन्तर्मुख बनेंगे तब मन्सा द्वारा पूरे विश्व को सका देने की सेवा कर सकेंगे।

29) मन्सा सेवा करने के लिए सर्व शक्तियों को अपने जीवन का अंग बना लो। ऐसे बाप समान परफेक्ट बनो जो अन्दर कोई डिफेक्ट न हो। तब श्रेष्ठ संकल्पों की एकाग्रता द्वारा मन्सा द्वारा स्वतः सकाश फैलेगी।

30) जैसे बीज में सारा वृक्ष समाया रहता है, ऐसे संकल्प रूपी बीज में सारे वृक्ष का विस्तार समा जाए तब संकल्पों की हलचल समाप्त होगी। जैसे आजकल दुनिया में राजनीति की हलचल, वस्तुओं के मूल्य की हलचल, करैन्सी की हलचल, कर्मभोग की हलचल, धर्म की हलचल .. बढ़ती जा रही है। उस हलचल से स्वयं को वा सर्व को बचाने के लिए मन-बुद्धि की एकाग्र करने का अभ्यास करो। एकान्तवासी बनो।

31) समय प्रमाण चारों ओर सकाश देने का, वायब्रेशन्स देने का, मन्सा द्वारा वायुमण्डल बनाने का कार्य करना है। अभी इस सेवा की आवश्यकता है। जैसे साकार रूप में देखा – कोई भी ऐसी लहर का समय जब आता था तो दिन-रात सकाश देने, निर्बल में बल भरने का अटेन्शन रहता था। समय निकाल आत्माओं को सकाश देने की सेवा चलती थी। ऐसे फॉलो फादर करो।